

धूम्रपान जागरूकता

अमित कुमार वर्मा

बीड़ी-सिगरेट, गुटखा, पान-मसाला या हो कोई अन्य, ऐसा ही व्यंजन निराला,
दिलो-दिमाग से हमने इनको क्यों है इतना पाला?
किशोरों, नवयुवकों और वृद्धजनों का है इसने जीवन ही नष्ट कर डाला
तमाम बीमारियां भले ही दिखती हों पल-पल पर,
फिर भी तलबगारों का मन क्यों करता है - 'कुछ और खाला'...।
पड़ गया मुंह में छाला, रूप-स्वरूप सब इसने बदरंग कर डाला,
कैंसर, ट्यूमर और श्वास सरीखे रोगों का जनक भी यही है आला
फिर क्यों रुकते नहीं, हम सबके यूं कदम,
सिगरेट के छल्ले में, गुटखा-पान व सुर्ती की बल्ले-बल्ले में।
हम क्यों भरते रहते है दनादन दम,
छद्म खुशियों की भ्रान्ति में, खोते रहते है सर्वस्व जीवन की कान्ति।
मत करो आसरा औरों पर यारों,
आइए, अपने ही हाथों इसे रोककर, नयी मशाल जलायें।
बीड़ी-सिगरेट, पान-मसाला, तम्बाकू के उद्योगों में रत,
बाल-मजदूरों का भविष्य बचायें।
मत करो सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का इंतजार,
कर रहा आपका खुद का सुप्रीम कोर्ट - 'आपका हृदय, आपकी आत्मा', इज़हार।
समझें इसे तुरंत, होकर धूम्रपान के प्रति जागरूक, औरों की ओर भी करें रूख।
समझें व समझायें महत्ता 'तिथि 31 मई' की,
और सबसे बढ़कर 84 लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ - 'मानव जीवन' की।
वेमतलब की नहीं हैं ये बातें, ऐ तलबगारों!,
तलब करें इस प्रण का, नहीं लेंगे जहर कभी 'निकोटिन' का।
छोड़ चलेंगे आज और अभी से वास्ता इस 'धूम्रपान-ए-रण' का,
सम्पूर्ण जीवन को धूम्रपान मुक्त हम सभी बनायेंगे?
सच में 'सच्चे मानव' होने का गौरव, हम तभी पायेंगे
गौरव, हम तभी पायेंगे.....।

संपर्क सूत्र :

श्री अमित कुमार वर्मा 'शान्तज', सुपुत्र श्री जे. एल. वर्मा
23/240, भारत भूषण कालोनी
गोला गोकर्ननाथ, जिला-लखीमपुर खीरी-262 802 (उ.प्र.)